IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)

बिहार शोध समागम BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

ISSN : 3048-6971

मौर्य कालीन कला : स्वरूप, विकास और सांस्कृतिक प्रतीकवाद (A Research Article)

Sushmita Sinha
MA- History
University - IGNOU (New Delhi)

अमूर्त (Abstract)

मौर्य कालीन कला प्राचीन भारतीय इतिहास के सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य में एक युगांतरकारी मील का पत्थर है। मौर्य साम्राज्य (चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू.) के उदय के साथ ही भारतीय उपमहाद्वीप में पहली बार संगठित और राजकीय संरक्षण प्राप्त कला का सूत्रपात हुआ। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य मौर्य कला के दो प्रमुख वर्गीकरणों–राजकीय (दरबारी) कला और लोक कला–का गहन विश्लेषण करना है। चंद्रगुप्त मौर्य और विशेष रूप से सम्राट अशोक के काल में कला ने मात्र सौंदर्यशास्त्र का रूप न रहकर, राजशाही विचारधारा और नैतिक संदेशों (धम्म) के प्रसार का एक सशक्त माध्यम ग्रहण किया। अशोक के एकाश्मक स्तंभ, उनके विस्मयकारी पशु शीर्ष, और वास्तुकला में पाषाण का अभूतपूर्व प्रयोग मौर्यकालीन तकनीकी कौशल और यूनानी-एकेमेनियन संपर्कों के प्रभाव को दर्शाता है। साथ ही, दीदारगंज की यक्षी और परखम के यक्ष जैसी लोक मूर्तियाँ तत्कालीन समाज की जीवंत धार्मिक आस्थाओं को रेखांकित करती हैं। यह शोध मौर्य कला की विशिष्ट ओपदार (चमकदार) पॉलिश, इसकी तकनीकी विशिष्टताओं और इसके वैश्विक व स्थानीय प्रभावों का समालोचनात्मक मूल्यांकन करता है।

कीवर्ड: मौर्य कला, अशोक के स्तंभ, राजकीय कला, लोक कला, धम्म, ओपदार पॉलिश, स्तूप वास्तुकला।

१. प्रस्तावना (Introduction)

प्राचीन भारतीय कला के इतिहास में मौर्य काल का आगमन एक विस्मयकारी और क्रांतिकारी घटना है। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में मगध की धरती पर चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित यह साम्राज्य न केवल राजनीतिक एकीकरण का प्रतीक था, बल्कि इसने कला और संस्कृति के क्षेत्र में भी एक अमिट छाप छोड़ी। मौर्य काल से पूर्व की भारतीय कला मुख्य रूप से काष्ठ (लकड़ी), मिट्टी, और घास-फूस जैसी नश्वर सामग्रियों पर आधारित थी, जिसके कारण उस काल के भौतिक साक्ष्य समय के थपेड़ों में नष्ट हो गए। मौर्य शासकों ने, विशेष रूप से सम्राट अशोक ने, इस परंपरा को बदलते हुए पाषाण (पत्थर) का व्यापक उपयोग शुरू किया। इस प्रकार, मौर्य कला ने भारतीय शिल्प को स्थायित्व प्रदान किया। मौर्य कला को समझने के लिए हमें तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक और धार्मिक परिस्थितियों को समझना होगा। इस युग में एक सुदृढ़ केंद्रीय सत्ता का विकास हुआ, जिसने विशाल आर्थिक संसाधनों को कलात्मक गतिविधियों की ओर मोड़ने में सफलता प्राप्त की। इसके अतिरिक्त, इस काल में बौद्ध और जैन धर्म जैसे श्रमण संप्रदायों के उभार ने कला को एक नई वैचारिक दिशा दी। मौर्य कला मात्र राजाओं के विलास का साधन नहीं थी; यह राज्य की शक्ति, सम्राट के नैतिक दर्शन (धम्म), और आम जनता की लोक-आस्थाओं का एक जटिल सम्मिश्रण थी।

विद्वानों ने मौर्य कला को मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित किया है:

1. **राजकीय कला (Court Art):** जिसे सम्राटों का प्रत्यक्ष संरक्षण प्राप्त था (जैसे स्तंभ, स्तूप, और राजप्रसाद)।
2. **लोक कला (Popular/Folk Art):** जो आम शिल्पकारों द्वारा स्थानीय जनता की धार्मिक और व्यावहारिक आवश्यकताओं के लिए बनाई गई थी (जैसे यक्ष-यक्षी की मूर्तियाँ और मृण्मूर्तियाँ)।

यह शोध लेख इन दोनों धाराओं के बीच के सूक्ष्म संबंधों, मौर्य कला की तकनीकी बारीकियों और इसके ऐतिहासिक महत्व का एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

२. मौर्य कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और वैचारिक आधार

मौर्य साम्राज्य की स्थापना चाणक्य की कूटनीति और चंद्रगुप्त मौर्य के शौर्य का परिणाम थी। अलेक्जेंडर (सिकंदर) के आक्रमण के बाद उत्तर-पश्चिम भारत में जो सांस्कृतिक और राजनीतिक हलचल मची, उसने भारत को वैश्विक संपर्कों के

केंद्र में ला खड़ा किया। यूनानी राजदूत मेगास्थनीज की 'इंडिका' और कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' इस काल के समृद्ध नगर नियोजन और राजसी वैभव की गवाही देते हैं।

जब सम्राट अशोक गद्दी पर बैठे, तो कलिंग युद्ध के रक्तपात ने उनके अंतर्मन को झकझोर दिया। उन्होंने 'भेरीघोष' (युद्ध की घोषणा) को त्यागकर 'धम्मघोष' (नैतिक विजय) का मार्ग अपनाया। अशोक ने यह भली-भांति समझा कि एक विशाल और विविधताओं से भरे साम्राज्य को केवल सैन्य बल से बांधकर नहीं रखा जा सकता। अतः उन्होंने कला को अपने 'धम्म' के प्रचार-प्रसार का माध्यम बनाया। उनके द्वारा निर्मित स्तंभ और उन पर उत्कीर्ण लेख वास्तव में प्रजा के साथ सीधे संवाद के माध्यम थे। इसलिए, मौर्य राजकीय कला का वैचारिक आधार पूरी तरह से नैतिक कल्याण, राजकीय प्रभुसत्ता और धार्मिक सहिष्णुता पर टिका हुआ था।

३. राजकीय कला का स्वरूप और वास्तुकला

मौर्य शासकों के संरक्षण में विकसित राजकीय कला अपनी भव्यता, तकनीकी सटीकता और विशालता के लिए जानी जाती है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख संरचनाएं आती हैं:

३.१ पाटलिपुत्र का राजप्रसाद (The Royal Palace of Pataliputra)

कुम्रहार (पटना) में उत्खनन से प्राप्त चंद्रगुप्त मौर्य के महल के अवशेष तत्कालीन वास्तुकला की चरम सीमा को दर्शाते हैं। मेगास्थनीज ने इसकी तुलना सूसा और एकबताना के ईरानी महलों से की थी और इसे उनसे भी अधिक भव्य बताया था।

- **विशिष्टताएँ:** यह महल मुख्य रूप से विशाल काष्ठ स्तंभों और शहतीरों से बना था। इसके केंद्र में एक विशाल अस्सी स्तंभों वाला हॉल (Hypostyle Hall) था।
- **शिल्प कौशल:** यद्यपि लकड़ी का उपयोग अधिक था, लेकिन पत्थरों पर जो नक्काशी और पॉलिश की गई थी, उसने चीनी यात्री फाह्यान को इतना प्रभावित किया कि उसने इसे "मानवों द्वारा नहीं बल्कि देवताओं द्वारा निर्मित" बताया।

३.२ अशोक के एकाश्मक स्तंभ (Monolithic Pillars of Ashoka)

अशोक के स्तंभ मौर्य राजकीय कला के सबसे उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ये स्तंभ भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों (जैसे सारनाथ, सांची, लौरिया नंदनगढ़, रामपुरवा और रुम्मिनदेई) में स्थापित किए गए थे।

- **अभियांत्रिकी और निर्माण:** ये स्तंभ 'एकाश्मक' (Monolithic) हैं, जिसका अर्थ है कि पूरा स्तंभ चुनार (मिर्जापुर) की पहाड़ियों से काटे गए पत्थर के एक ही विशाल टुकड़े से बनाया गया था। इनकी ऊंचाई ३० से ५० फीट तक है और वजन लगभग ५० टन तक है। इन भारी पत्थरों को सैकड़ों मील दूर ले जाकर स्थापित करना मौर्य काल के उन्नत परिवहन और अभियांत्रिक कौशल को सिद्ध करता है।
- **स्तंभ की संरचना:** एक मानक अशोक स्तंभ के मुख्य रूप से चार भाग होते हैं:
    1. **लाट (Shaft):** यह नीचे से ऊपर की ओर पतली होती जाती है और पूरी तरह गोल तथा चिकनी होती है।
    2. **अधोमुखी कमल (Inverted Lotus/Bell):** लाट के ठीक ऊपर घंटे या उल्टे कमल के आकार की संरचना होती है, जिसे कुछ विद्वान ईरानी प्रभाव मानते हैं, तो कुछ इसे भारतीय उर्वरता का प्रतीक।
    3. **चौकी (Abacus):** कमल के ऊपर एक गोल या वर्गाकार चौकी होती है, जिस पर हंस, हाथी, सिंह या बैल जैसे पशुओं के चित्र उभरे हुए रूप में उकेरे गए हैं।
    4. **पशु शीर्ष (Capital/Animal Figure):** चौकी के शीर्ष पर एक या अधिक पशुओं की मूर्तियाँ स्थापित होती हैं।

[पशु शीर्ष (Capital) - उदा. सिंह]
|
[चौकी (Abacus)]
|

[अधोमुखी कमल (Inverted Lotus)]
|
|
[लाट (Shaft)]
|
|

३.३ सारनाथ का सिंह शीर्ष (Sarnath Lion Capital)

सारनाथ से प्राप्त सिंह शीर्ष भारत की कलात्मक धरोहर का सर्वोत्कृष्ट रत्न है, जिसे भारत गणराज्य ने अपने राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया है।

- **संरचना:** इसमें चार सजीव सिंह पीठ से पीठ सटाए चारों दिशाओं की ओर देख रहे हैं। यह सम्राट के सार्वभौमिक प्रभाव और धम्म के चारों दिशाओं में प्रसार का प्रतीक है।
- **चौकी का चक्र:** सिंहों के नीचे स्थित चौकी पर चार चक्र (धर्मचक्र) बने हैं, जिनके बीच में चार गतिशील पशु–हाथी (बुद्ध के गर्भ में आने का प्रतीक), घोड़ा (गृहत्याग), बैल (जन्म राशि) और सिंह (शाक्यसिंह के रूप में बुद्ध)–अंकित हैं।

४. मौर्यकालीन स्तूप और गुहा वास्तुकला

मौर्य काल में बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण धार्मिक वास्तुकला का तीव्र विकास हुआ।

४.१ स्तूप वास्तुकला (Stupa Architecture)

मूल रूप से स्तूप बुद्ध या उनके प्रमुख शिष्यों के अवशेषों (अस्थियों, दांतों आदि) पर निर्मित की जाने वाली अर्धगोलाकार मिट्टी की संरचनाएँ थीं। अशोक के काल में इन्हें पाषाण और ईंटों से स्थायी रूप दिया गया।

- **सांची का स्तूप:** मध्यप्रदेश के सांची में स्थित महास्तूप की नींव अशोक ने ही रखी थी (यद्यपि इसका बाद में शुंग काल में विस्तार हुआ)। मौर्यकालीन स्तूप सादगी और ज्यामितीय संतुलन के अद्भुत उदाहरण थे। ये ब्रह्मांड के प्रतीक और बुद्ध के महापरिनिर्वाण के स्मारक माने जाते थे।

४.२ गुहा वास्तुकला (Cave Architecture)

मौर्य काल में ही भारत में चट्टानों को काटकर गुफाएं (Rock-cut Caves) बनाने की कला का जन्म हुआ। बिहार के गया के पास **बराबर और नागार्जुन की पहाड़ियों** में स्थित गुफाएं इसका प्रमाण हैं।

- **अजीवक संप्रदाय को दान:** सम्राट अशोक और उनके पौत्र दशरथ ने इन गुफाओं को काटकर अजीवक भिक्षुओं के निवास (विहार) के लिए दान में दिया था।
- **लोमस ऋषि गुफा:** इस गुफा का प्रवेश द्वार लकड़ी की झोपड़ी के अग्रभाग की नकल पर पत्थर को काटकर बनाया गया है, जो बेहद आकर्षक है। इन गुफाओं के भीतर की दीवारें इतनी चमकदार हैं कि आज भी उनमें शीशे की तरह चेहरा देखा जा सकता है।

५. लोक कला का प्रकटीकरण: यक्ष और यक्षी की मूर्तियाँ

राजकीय कला जहाँ भव्य और गंभीर थी, वहीं लोक कला आम जनता के धार्मिक विश्वासों, प्रकृति पूजा और उर्वरता की भावनाओं से जुड़ी हुई थी। मौर्य काल की लोक कला मुख्य रूप से स्वतंत्र रूप से निर्मित विशाल पाषाण मूर्तियों में दिखाई देती है।

५.१ दीदारगंज की चामर-धारिणी यक्षी (Didarganj Yakshi)

पटना के दीदारगंज से प्राप्त यक्षी की मूर्ति मौर्यकालीन मूर्तिकला का सर्वश्रेष्ठ और जीवंत उदाहरण है।

- **शारीरिक सौष्ठव:** त्रिभंग मुद्रा में खड़ी इस देवी की मूर्ति का शारीरिक अनुपात, पतली कमर, भारी पयोधर और चेहरे के भाव तत्कालीन मूर्तिकारों की शारीरिक रचना (Anatomy) की गहरी समझ को दर्शाते हैं।

- **शिल्प सौंदर्य:** इसके दाहिने हाथ में चामर (चैरी) है और बाएं हाथ का कुछ भाग खंडित है। इसके आभूषणों और वस्त्रों की सिलवटों को पत्थर पर बेहद सूक्ष्मता से उकेरा गया है। इस पर मौजूद ओपदार पॉलिश इसे एक अलौकिक चमक प्रदान करती है।

५.२ परखम और बेसनगर के यक्ष

मथुरा के पास परखम से प्राप्त विशाल यक्ष मूर्ति (लगभग ७ फीट ऊंची) तत्कालीन लोक कला की विशालता और शक्ति का प्रदर्शन करती है। ये मूर्तियाँ दर्शाती हैं कि बौद्ध धर्म के राजकीय संरक्षण के बावजूद, समाज के निचले स्तर पर यक्ष-यक्षी और नाग-नागिन जैसी लोक शक्तियों की पूजा बदस्तूर जारी थी। ये मूर्तियाँ बाद के काल में (कुषाण और गुप्त काल में) विकसित होने वाली बोधिसत्व और जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों के लिए आधार बनीं।

६. मौर्य कला की तकनीकी विशिष्टताएँ और 'ओपदार पॉलिश'

मौर्य कला को जो तत्व दुनिया की अन्य प्राचीन कलाओं से अलग करता है, वह है इसकी तकनीकी श्रेष्ठता।

६.१ ओपदार पॉलिश (Mauryan Polish)

मौर्यकालीन पाषाण शिल्पों पर एक विशेष प्रकार की अत्यंत चमकदार, शीशे जैसी पॉलिश पाई जाती है, जिसे **'ओपदार पॉलिश'** कहा जाता है।

- **रहस्यमयी तकनीक:** चुनार के बलुआ पत्थर (Sandstone) पर की गई यह पॉलिश इतनी सघन और टिकाऊ है कि दो हजार से अधिक वर्ष बीत जाने के बाद, खुले आसमान और मौसम की मार झेलने के बावजूद इसकी चमक फीकी नहीं पड़ी है। वैज्ञानिक आज भी इस तकनीक के सटीक रसायनों का पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं। इस पॉलिश के कारण पत्थर धातु या चीनी मिट्टी जैसा प्रतीत होता है।

६.२ सामग्री का चयन

मौर्य शिल्पकारों ने पत्थरों के चयन में अत्यधिक सूझबूझ का परिचय दिया। स्तंभों के लिए केवल मिर्जापुर के चुनार से प्राप्त भूरे रंग के दानेदार बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया। एक ही खदान से इतनी भारी मात्रा में पत्थर निकालना और पूरे देश में उसकी आपूर्ति करना एक सुव्यवस्थित राजकीय नियंत्रण के बिना संभव नहीं था।

७. वैदेशिक प्रभाव बनाम स्वदेशी नवोन्मेष: एक समालोचनात्मक विमर्श

मौर्य कला, विशेष रूप से अशोक के स्तंभों पर विदेशी प्रभाव (विशेष रूप से हखामनी या एकेमेनियन और यूनानी/हेलेनिस्टिक कला) को लेकर इतिहासकारों में लंबा विवाद रहा है। सर जॉन मार्शल और स्पूनर जैसे पश्चिमी विद्वानों का मानना था कि मौर्य कला ईरानी कला की नकल है।

७.१ ईरानी (एकेमेनियन) कला से तुलना और अंतर

यह सच है कि मौर्य साम्राज्य के संबंध ईरान और यूनान से थे, इसलिए कुछ तत्वों का आदान-प्रदान स्वाभाविक था। परंतु मौर्य कला ईरानी कला की अंधी नकल नहीं थी। दोनों में मौलिक अंतर हैं:

विशिष्टता	ईरानी (एकेमेनियन) स्तंभ	मौर्यकालीन (अशोक के) स्तंभ
निर्माण तकनीक	ये कई पत्थरों के टुकड़ों को जोड़कर बनाए गए थे (Jointed)।	ये 'एकाश्मक' (Monolithic) हैं, यानी एक ही पत्थर से निर्मित।
स्थापना स्थल	ये राजप्रसादों के भीतर विशाल हॉलों को सहारा देने के लिए बनाए गए थे।	ये खुले आकाश के नीचे, स्वतंत्र स्मारकों के रूप में स्थापित थे।
लाट का स्वरूप	इनकी लाट (Shaft) नालीदार	इनकी लाट पूरी तरह सपाट, चिकनी

	(Fluted) होती थी।	और गोल होती है।
वैचारिक उद्देश्य	ये केवल राजा की शक्ति और भव्यता के प्रदर्शन के लिए थे।	ये राजा के नैतिक संदेशों और 'धम्म' के प्रचार के साधन थे।

७.२ स्वदेशी नवोन्मेष का पक्ष

आनंद कुमारस्वामी और वासुदेव शरण अग्रवाल जैसे भारतीय विद्वानों ने अकाट्य तर्कों से सिद्ध किया है कि मौर्य कला की जड़ें भारतीय परंपरा में गहरी धंसी हुई थीं। वैदिक काल से चली आ रही 'धज' (ध्वज) और 'यूप' (यज्ञ स्तंभ) की परंपरा ही अशोक के स्तंभों के रूप में विकसित हुई। कमल और पशुओं का प्रतीकात्मक महत्व भारतीय वास्तुकला में प्रागैतिहासिक काल से रहा है। अतः मौर्य कला विदेशी तत्वों को आत्मसात करके विकसित हुई एक अत्यंत परिष्कृत 'स्वदेशी कला' थी।

८. मौर्य कला का प्रतीकात्मक और सांस्कृतिक महत्व

मौर्य कला का प्रत्येक अवयव किसी न किसी गहरे सांस्कृतिक या धार्मिक प्रतीक से जुड़ा हुआ था:

- **चक्र:** यह न केवल बुद्ध के 'धर्मचक्रप्रवर्तन' (उपदेश की शुरुआत) का प्रतीक है, बल्कि यह समय की निरंतरता और मौर्य सम्राट के 'चक्रवर्ती' (सार्वभौमिक शासक) होने के राजनीतिक दावे को भी दर्शाता है।
- **सिंह:** सिंह को शाक्यसिंह (बुद्ध) का प्रतीक माना जाता है। साथ ही यह राजकीय शक्ति, साहस और संप्रभुता का भी प्रतिनिधित्व करता है।
- **हाथी और बैल:** ये बुद्ध के जीवन की घटनाओं (गर्भधारण और जन्म) के साथ-साथ कृषि-आधारित भारतीय अर्थव्यवस्था में समृद्धि और उत्पादकता के पारंपरिक प्रतीक थे।

९. निष्कर्ष (Conclusion)

निष्कर्षतः, मौर्य कालीन कला प्राचीन भारतीय इतिहास का वह गौरवशाली अध्याय है जिसने कला को केवल व्यक्तिगत अभिव्यक्ति से ऊपर उठाकर राजकीय नीति और सामाजिक-धार्मिक सुधार का एक वैश्विक माध्यम बना दिया। चंद्रगुप्त और अशोक के प्रयासों से पत्थर को जो रूप दिया गया, उसने आने वाली सदियों के लिए भारतीय मूर्तिकला और वास्तुकला का मार्ग प्रशस्त किया।

जहाँ एक ओर राजकीय कला ने अपनी तकनीकी सटीकता, एकाश्मक भव्यता और रहस्यमयी ओपदार पॉलिश से दुनिया को चकित किया, वहीं दूसरी ओर लोक कला ने मिट्टी और पत्थरों में समाज की धड़कनों और जन-आस्थाओं को सुरक्षित रखा। विदेशी प्रभावों को अपनी मौलिकता में घुलाकर एक नया आयाम देना ही मौर्य शिल्पकारों की सबसे बड़ी सफलता थी। यही कारण है कि आज भी मौर्य कला के प्रतीक–चाहे वह सारनाथ का सिंह शीर्ष हो या धर्मचक्र–आधुनिक भारत की राष्ट्रीय अस्मिता, शांति और नैतिक मूल्यों के पथ-प्रदर्शक के रूप में जीवित हैं। यह कला मात्र अतीत का पुरावशेष नहीं, बल्कि भारतीय चेतना का शाश्वत प्रतिमान है।

१०. विस्तृत संदर्भ ग्रंथ सूची (Detailed Bibliography)

1. **अग्रवाल, वासुदेव शरण.** (१९६५). *भारतीय कला (Indian Art)*. वाराणसी: पृथ्वी प्रकाशन।
2. **कुमारस्वामी, आनंद के.** (१९२७). *History of Indian and Indonesian Art*. न्यू यॉर्क: डोवर पब्लिकेशंस।
3. **थापर, रोमिला.** (१९९७). *अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन (Asoka and the Decline of the Mauryas)*. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. **रायचौधरी, हेमचंद्र.** (१९५३). *Political History of Ancient India*. कलकत्ता: कलकत्ता विश्वविद्यालय।
5. **मजूमदार, आर. सी.** (संपादक). (१९५१). *The Age of Imperial Unity (The History and Culture of the Indian People, Vol. 2)*. बंबई: भारतीय विद्या भवन।
6. **गुप्त, स्वराज्य प्रकाश.** (१९८०). *The Roots of Indian Art: A Detailed Study of the Formative Period of Indian Art and Architecture (Third and Second Centuries B.C. - Mauryan and Late Mauryan)*. नई दिल्ली: बी. आर. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
7. **बाशम, ए. एल.** (१९६७). *अद्भुत भारत (The Wonder That Was India)*. नई दिल्ली: रूपा एंड कंपनी।
8. **मिश्रा, रामनाथ.** (१९८१). *Yaksha Cult and Iconography*. नई दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स।
9. **राय, निहाररंजन.** (१९७५). *Maurya and Post-Maurya Art: A Study in Social and Formal Contacts*. कलकत्ता: इंडियन स्टडीज: पास्ट एंड प्रेजेंट।
10. **चौधरी, राधाकृष्ण.** (१९७४). *कौटिलीया अर्थशास्त्र का ऐतिहासिक मूल्यांकन*. नई दिल्ली: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।
11. **शर्मा, रामशरण.** (२००५). *प्राचीन भारत का इतिहास*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. **मार्शल, जॉन.** (१९५१). *Taxila: An Illustrated Account of Archaeological Excavations*. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. **स्पूनर, डी. बी.** (१९१५). "The Zoroastrian Period of Indian History", *Journal of the Royal Asiatic Society*, pp. 405-455.
14. **हंटिंगटन, सुसान एल.** (१९८५). *The Art of Ancient India: Buddhist, Hindu, Jain*. न्यू यॉर्क: वेदरहिल।
15. **सिंघल, डी. पी.** (१९६९). *India and World Civilization*. मिशिगन.